# भूमिका

भाषा और समाज का एक दूसरे के बिना कोई अस्तित्व नहीं है, अतः भाषा और समाज को एक-दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः उसे भाषा तथा समाज दोनों की आवश्यकता होती है। भाषा समाज में मनुष्य को एक-दूसरे के संपर्क में लाने का माध्यम है, तथा मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन है। मनुष्य भाषा का प्रयोग समाज में करता है तथा समाज में रहकर ही वह भाषा सीखता है। अतः भाषा के कारण समाज की पहचान भी बनती है, भाषा और समाज दोनों का विकास एक-दूसरे के माध्यम से होता है। मनुष्य की पहचान भाषा से और भाषा की पहचान समाज से होती है। प्रत्येक भाषा की अपनी शब्द संपदा होती है, समाज के लोग एक दूसरे के संपर्क में आते हैं तो उनका भाषाई संपर्क भी होता है साथ ही निरन्तर भाषिक संपर्क के कारण उनकी अपनी भाषा में शब्दों का आदान-प्रदान, मिश्रण आदि होता रहता है, जिससे उनकी भाषिक संपदा में वृद्धि होती रहती है।

प्रस्तुत शोध का विषय **"चुनार शहर की हिंदी में कोड-मिश्रण"** है। जिसके अंतर्गत चुनार शहर की हिंदी पर अन्य भाषा के मिश्रण से हो रहे बदलाव को दर्शाया गया है। मिर्जापुर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक शहर है। पर्यटन की दृष्टी से मिर्जापुर काफी महत्वपूर्ण जिला माना जाता है। चुनार शहर उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में वाराणसी से 40 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है। चुनार क्षेत्र मिर्जापुर जनपद की एक तहसील है। चुनार प्राचीन काल से आध्यात्मिक, राजनैतिक और व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध रहा है। वर्तमान समय में भी धार्मिक उन्मुखता, उद्योग, व्यापार एवं रोजगार के अन्य साधनों की उपलब्धता भी लोगों के आकर्षण का कारण है। गंगा किनारे स्थित होने के कारण चुनार का सीधा व्यापारिक संबंध कोलकाता और दक्षिण पूर्व से था। हिंदी भाषी चुनार शहर की स्थानीय भाषा

भोजपुरी है लेकिन व्यापारिक क्षेत्र होने की वजह से चुनार शहर में अन्य भाषाएँ एवं बोलियाँ जैसे अंग्रेजी, अवधी, आदि का प्रभाव दिखाई देता है।

## प्राक्कल्पना

संचार-क्रांति और भाषा संपर्क की दृष्टि से देश के दूसरे भागों की तरह ही मिर्जापुर के चुनार शहर की भाषा में भी तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इस प्रक्रिया में कोड-मिश्रण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

ऐसी स्थिति में चुनार की हिंदी एवं अन्य भाषाओं के परस्पर प्रभाव से हिंदी भाषा में संरचना के स्तर पर बदलाव हो रहा है।

## शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कोड-मिश्रण के परिणाम स्वरूप चुनार शहर के हिंदी पर पड़ने वाले प्रभावों और उससे भाषा में हो रहे बदलाव, इस अध्ययन का अभीष्ट है।

## शोध सीमा

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में केवल कोड मिश्रण के आधार पर विश्लेषण किया गया है। इस शोध में आँकड़ो का चयन वाचिक सामग्री तक सीमित है।

## शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए क्षेत्रीय अध्ययन किया गया है। इस शोध में मात्रात्मक विश्लेष्ण एवं गुणात्मक विश्लेष्ण, दोनों विधियों का प्रयोग किया गया है। मात्रात्मक विश्लेष्ण के अंतर्गत सर्वेक्षण, रिकॉर्डिंग आदि विधियों का प्रयोग किया गया है।

## रिव्यू ऑफ लिटरेचर

चुनार शहर की हिंदी भाषा का कोई भी समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन अब तक नहीं हुआ है, फिर भी समाजभाषाविज्ञान तथा कोड-मिश्रण की प्रक्रियाओं पर किए गए अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन के लिए मार्गदर्शक हैं। अतः यहाँ ऐसे कुछ महत्त्वपूर्ण संदर्भों की प्रस्तुतविषय की दृष्टि से समीक्षा प्रस्तुत है -

1. **श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ. (1994). हिंदी भाषा का समाजशास्त्र. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन**

यह पुस्तक समाजभाषाविज्ञान की मूल बातों को समझने के लिए एक अच्छी पुस्तक है। रवींद्रनाथ श्रीवास्तव की यह पुस्तक मूलतः इस लक्ष्य और उद्देश्य को साधती है कि 'भाषा-अध्ययन' के माध्यम से हम सामाजिक संरचना की तह तक पहुँच सकें तथा भाषाई लक्षणों के माध्यम से सामाजिक संगठन के लक्षणों की परख कर सकें। यह क्षेत्र भाषा, उसकी बोलियों एवं इनके प्रयोगगत विकल्पों को व्यापक सामाजिक घटकों से संबद्ध करके देखने की दृष्टि भी हमें प्रदान करती है। बहुभाषिकता का विकास, भाषा का मानकीकरण और आधुनिकीकरण, भाषा-विकास में भाषा-नियोजन की भूमिका आदि कुछ अध्ययन क्षेत्र पर विस्तार से चर्चा हुई है। इस पुस्तक में कोड-परिवर्तन एवं कोड-मिश्रण पर विस्तार से चर्चा नहीं है, परंतु इसके कुछ अध्यायों में बहुभाषिकता पर बात हुई है जो कोड-परिवर्तन एवं कोड-मिश्रण की जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

2. **Malik, Lalita. (1994). Socio-Linguistics A Study of Code-Switching. New Delhi : Anmol Publications.**

इस पुस्तक में कोड-परिवर्तन पर विस्तार से चर्चा हुई है जो शोध कार्य के लिए उपयोगी है। लेखक ने पुस्तक को कुल छः अध्याय में विभक्त किया है जिसमें पहले अध्याय में इन्होंने कोड-परिवर्तन के सभी प्रक्रियाओं पर चर्चा हुई है। इस पुस्तक के अध्यायों को शोध की रुपरेखा के रूप में बनाया गया है, जिससे शोधार्थी को शोध की रूपरेखा बनाने में मदत मिली। इसके साथ-साथ इनकी पुस्तक में पोपलैक द्वारा दिए गए कोड-परिवर्तन के तीन प्रकारों का वर्णन किया गया है।

## अध्याय - विन्यास

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का शीर्षक **"चुनार शहर की हिंदी में कोड मिश्रण" है**। इसमें चुनार शहर में प्रयुक्त होने वाली हिंदी पर विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों के प्रभाव का आँकड़ा संकलन वर्गीकरण व विश्लेषण के आधार पर अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है।

**प्रस्तुत शोध प्रबंध को तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है।**

**पहला अध्याय 'चुनार शहर : परिचय एवं कोड-मिश्रण'** में चुनार के परिचय के अंतर्गत - भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, व्यापारिक तथा सामाजिक संरचना, चुनार की भाषिक स्थिति तथा भाषा संपर्क एवं कोड-मिश्रण को संक्षेप में बताया गया है।

**दूसरा अध्याय 'कोड मिश्रण संबंधी आँकड़ो का वर्गीकरण'** के अंतर्गत सूचकों का चयन, उनसे एकत्रित सामग्री का संक्षिप्त विवरण, संकलित सामग्री में आई कठिनाईयों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। आंकड़ो को एकत्रित करने के लिए मात्रात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

**तीसरा अध्याय 'कोड-मिश्रण के विविध स्तर पर विश्लेषण'** के अंतर्गत चुनार शहर के लोगों से संकलित सामग्री का ध्वनि, शब्द, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य के स्तर पर अध्ययन तथा विश्लेषण किया गया है।

अंत में उपसंहार के अंतर्गत सभी अध्यायों का निष्कर्ष एवं प्रस्तुत शोध कार्य के महत्त्व को संक्षेप में प्रस्तुत किया है।